सुरिंदर @ मिथन बनाम हरियाणा का राज्य

माननीय न्यायमूर्ति मेहताब एस. गिल

माननीय न्यायमूर्ति मेहताब एस. गिल और बलदेव सिंह के समक्ष

सुरिंदर @ मिथन – अपीलकर्ता

बनाम

हरियाणा का राज्य – उत्तरदाता

क्रिमिनल अपील नं 186 का 2006/ दी.बी और

हत्या का संदर्भ न 1 का 2006

20 सितंबर, 2006

भारतीय दंड संहिता, 1860- धारा 302, 364-ए और 201 हत्या का संदर्भ - फिरौती के लिए लगभग साढ़े ३ वर्ष की आयु के बच्चे का अपहरण - अपीलकर्ता ने बच्चे को चिमनी के गैस आउटलेट में डाल दिया - अपीलकर्ता की फिरौती लेने और बच्चे को न मारने की इच्छा - बच्चे को छिपाने की उत्सुकता में, अपीलकर्ता ने उसे ईंट भट्टे के गैस आउटलेट में डाल दिया, यह महसूस किए बिना कि बच्चा उचित वेंटिलेशन के बिना मर जाएगा- अपीलकर्ता का मामला दुर्लभतम मामलों की श्रेणी में नहीं आता है- अपीलकर्ता की सजा को मृत्युदंड से आजीवन कारावास में बदल दिया गया है।

निर्णय, शमन करने और गंभीर परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, हमारी सुविचारित राय है कि अपीलकर्ता का मामला दुर्लभतम मामलों की श्रेणी में नहीं आता है। यह सबूत में आया है कि अपीलकर्ता ने बच्चे को चिमनी के गैस आउटलेट में डाल दिया, और ये एहसास नहीं किया कि वह मर जाएगा। अपीलकर्ता की मंशा फिरौती के पैसे निकालने की था न कि

बच्चे को मारने की। अगर वह ओजू की हत्या करना चाहता था, तो वह उसी दिन ऐसा कर सकता था, जब रात में बच्चे का अपहरण किया गया था। डॉ. एस.के धतरवाल द्वारा चोट का कोई निशान नहीं पाया गया है। आपराधिक अपील में हमें आई.पी. सी की धारा 302 के तहत अपीलकर्ता की दोषसिद्धि के मुकदमे के फैसले में कोई खामी नहीं मिली है। अपीलकर्ता की सजा कठोर पक्ष पर मानी जा रही है। मौत की सजा न देने के लिए अपीलकर्ता के पक्ष में जाने वाली परिस्थितियों को शमन करने वाली परिस्थितियां यह हैं कि सबसे पहले, यह परिस्थितिजन्य साक्ष्य का मामला है, हालांकि घटनाओं की श्रृंखला पूरी हो गई है। बच्चे को अपीलकर्ता ने मारना नहीं चाहा था, लेकिन बच्चे को छिपाने की उत्सुकता में, उसने उसे ईंट भट्टे के गैस आउटलेट में डाल दिया। उसे एहसास नहीं था कि बच्चा एक जगह पर जीवित रहने के लिए बहुत छोटा था, जो ठीक से हवादार भी नहीं था।.

(पैरा 16)

कुलवीर नरवाल- अतिरिक्त महाधिवक्ता- हरियाणा

ज्योति चौधरी- दोषी/अपीलकर्ता की वकील।

<u>निर्णय</u>

माननीय न्यायमूर्ति मेहताब, एस गिल,

1. यह सी.आर.पी.सी की धारा 366/368 के तहत सोनीपत के अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश द्वारा भेजा गया एक हत्या संदर्भ है। सोनीपत के अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश ने दिनांक 14 फरवरी, 2006/15 फरवरी, 2006 को अपने निर्णय/आदेश के तहत अपीलकर्ता सुरेंद्र @ मिठन पुत्र, ओम प्रकाश को भारतीय दंड संहिता की धारा 302/364ए/201 के तहत दोषी ठहराया और उसे भारतीय दंड संहिता की धारा 364ए और धारा 302 के तहत मौत की सजा सुनाई। इसके

अलावा उन्होंने अपीलकर्ता को धारा 201 आई.पी.सी के तहत दोषी ठहराया और उसे सात साल के लिए आर.आई की सजा सुनाई।

2. हम 2006 के मर्डर रेफरेंस नंबर 1 और अपीलकर्ता सुरेंद्र @ मिथन द्वारा दर्ज की गई आपराधिक अपील संख्या अपील, 186-डीबी ऑफ़ 2006 की आपराधिक अपील संख्या को एक साथ लेंगे और एक आम निर्णय पारित करेंगे, क्योंकि दोनों एक ही फैसले / आदेश से उत्पन्न होते हैं।

3. अभियोजन पक्ष का मामला 15 मार्च, 2004 को तड़के 3.00 बजे शर्मा नर्सिंग होम, फरमाना में खरखौदा के थाना प्रभारी एस.आई याद राम को दिए गए डॉ धर्मेंद्र शर्मा के बयान Ex.पी.ओ से सामने आता है। डॉ. धर्मेंद्र शर्मा ने बताया कि वह बस स्टैंड के पास शर्मा अस्पताल के नाम और स्टाइल से क्लीनिक चला रहे हैं। उसके दो बच्चे हैं, बड़ा धारुव 9 साल का है और छोटा ओजू 3 साल का है। 14 मार्च, 2004 को रात लगभग 8:00 बजे वह अपने अस्पताल के अंदर बैठे थे और उनका छोटा बेटा अस्पताल के गेट के पास खेल रहा था। कुछ समय बाद, उन्होंने पाया कि उनका बेटा ओजू गायब था। उसने उसकी तलाश की, लेकिन वह नहीं मिला। उन्होंने आशंका जताई कि नरेश पुत्र, मोहिंदर सिंह, जाट निवासी, फरमाणा और उसके साथी सुनील पुत्र ,सिम्मल निवासी ,फरमाणा ने फिरौती पाने के लिए और जान से मारने की नीयत से उनके बेटे ओजू का अपहरण किया है। आशंका है कि इनके साथ कोई अन्य व्यक्ति भी शामिल हो सकते है। इस बयान के आधार पर एफ.आई.आर Ex पी.जी दर्ज की गई।

4. अभियोजन पक्ष ने अपने मामले को साबित करने के लिए गवाहों के कठघरे में डॉ. अंजू शर्मा को पी.डब्ल्यू-1 के रूप में ,मुकेश परूथी पी.डब्ल्यू-२, पी.डब्ल्यू-3 के रूप में इंदर पाल ड्राफ्ट्समैन पी.डब्ल्यू-4 के रूप में, अनिल कुमार श्रीवास्तव, पी.डब्ल्यू-5 के रूप में ए.एस.आई राम कुमार, पी.डब्ल्यू-6 के रूप में एच.सी राम प्रेम, डॉ. एस.के धतरवाल को पीडब्ल्यू-7, शिव कुमार को पीडब्ल्यू-8, मदन लाल मलिक को पीडब्ल्यू-9, रुदर दत्त को पीडब्ल्यू-10, डॉ. धर्मेंद्र शर्मा को पीडब्ल्यू-11, एस.एल याद राम को पीडब्ल्यू12, इंस्पेक्टर राम को

पीडब्ल्यू-13, एच.सी राज पाल को पीडब्ल्यू-14, कांस्टेबल नरेश कुमार को पीडब्ल्यू-15 को शामिल किया।

5. अपीलकर्ता के वकील ने तर्क दिया है कि विद्वान ट्रायल कोर्ट द्वारा जिन परिस्थितियों पर भरोसा किया गया है, वे ठोस और विश्वसनीय नहीं हैं। मृतक को अपीलकर्ता के साथ देखे जाने की कहानी, मृतक के पिता के सेल फोन पर अपीलकर्ता द्वारा दिए गए मोबाइल टेलीफोन कॉल, फिरौती के रूप में 7 लाख रुपये की मांग, अपीलकर्ता के इशारे पर शव बरामद किया जाना और अपीलकर्ता द्वारा कथित रूप से अतिरिक्त न्यायिक स्वीकारोक्ति, परिस्थितियों की श्रृंखला को पूरा नहीं करती। अपीलकर्ता को अदालत के समक्ष पेश किए गए सबूतों के आधार पर दोषी नहीं ठहराया जा सकता है। मृतक की मां डॉ. अंजू शर्मा, पी.डब्लू.-1, मृतक के नाना मदन लाल मलिक पीडब्ल्यू-9 और मृतक के पिता डॉ. धर्मेंद्र शर्मा सभी इच्छुक गवाह हैं।

6. मुकेश प्रुथी पी.डब्ल्यू -2, ने अपनी गवाही में कहा है कि 14 मार्च, 2004 को शाम लगभग 6:00 बजे वह डॉ धर्मेंद्र शर्मा पी.डब्ल्यू-II से दवाइयों का भुगतान लेने के लिए शर्मा अस्पताल आए थे। एफ़.आई.आर Ex PG 15 मार्च, 2004 को लगभग 4:15 AM को दर्ज की। मुकेश परूथी को घटना के बारे में 15 मार्च, 2004 को अख़बार द्वारा पता चला। उन्होंने कहा है कि वह अपीलकर्ता और मृत बच्चे ओजू दोनों को जानते थे। यह अजीब है कि बस स्टैंड पर उन्होंने अपीलकर्ता को पहचान लिया, लेकिन उन्होंने ओजू को नहीं पहचाना, जिसे कथित तौर पर अपीलकर्ता द्वारा ले जाया जा रहा था। उनके द्वारा अपीलकर्ता को बच्चे को ले जाने से रोकने की कोशिश नहीं की गई।

7. मृतक के नाना मदन लाल मलिक पीडब्ल्यू-9 के समक्ष किया गया न्यायेतर कबूलनामा विश्वसनीय नहीं है। मदन लाल मलिक पीडब्ल्यू-9 द्वारा बताए गए लगभग एक महीने के बाद, अपीलकर्ता, 7

अप्रैल, 2004 को उनके पास आया और उनके समक्ष एक स्वीकारोक्ति की कि उन्होंने ओजू का अपहरण कर लिया था और अपना अपराध स्वीकार कर लिया था। इसी तरह, डॉ. धर्मेंद्र शर्मा पीडब्ल्यू -11 का बयान भी विश्वसनीय और भरोसेमंद नहीं है, क्योंकि उन्होंने कहा है कि अपीलकर्ता उन्हें जानता था और अक्सर उनके घर आया करता था। वास्तव में, अपीलकर्ता और डॉ धर्मेंद्र शर्मा पीडब्ल्यू-11 का रिश्ता इतना करीबी था कि अपीलकर्ता की मां का इलाज मृतक के पिता डॉ धर्मेंद्र शर्मा पीडब्ल्यू-11 द्वारा किया गया था। अपीलकर्ता ने डॉ धर्मेंद्र शर्मा पीडब्ल्यू-11 के घर के निर्माण में भी मदद की है। इस्तेमाल किया गया मोबाइल फोन अपीलकर्ता के नाम पर नहीं था, बल्कि सुधीर के नाम पर था जैसा कि श्री अनिल श्रीवास्तव, पीडब्ल्यू -4, एस्कोटेल मोबाइल कंपनी द्वारा कहा गया है। अपीलकर्ता के वकील ने आगे तर्क दिया है कि अभियोजन पक्ष द्वारा दी गई परिस्थितियां एक श्रृंखला नहीं बनाती हैं और अपीलकर्ता को संदेह का लाभ देकर बरी कर दिया जाना चाहिए।

8. अपीलकर्ता को मौत की सजा दी जानी चाहिए क्योंकि अभियोजन पक्ष के साक्ष्य से, अगर वह सच पाया जाता है तो, यह माना जा सकता है कि अपीलकर्ता बच्चे को मारना नहीं चाहता था, लेकिन अधिक से अधिक, अपने एकमात्र उद्यम के लिए फिरौती का पैसा चाहता था। दुर्भाग्य से, बच्चे को एक ईंट भट्टे की चिमनी के गैस आउटलेट में डाल दिया गया था। ईंट का भट्ठा उस समय काम नहीं कर रहा थी। अगर ऐसा ही होता, तो शव जल गया होता।

9. राज्य के वकील ने तर्क दिया है कि अपीलकर्ता डॉ धर्मेंद्र शर्मा पीडब्ल्यू -11 को जानता था, क्योंकि उसने उसके लिए मिट्टी भरने का काम किया था। बचाव पक्ष द्वारा इसके विपरीत कोई सुझाव नहीं दिया गया है कि अपीलकर्ता मृतक के पिता को नहीं जानता था। यह अपीलकर्ता द्वारा दिए गए प्रकटीकरण वक्तव्य Ex.पीएम के आधार पर है कि मोबाइल फोन नंबर 9812064388 **तुरी**, से बरामद किया गया था, रिकवरी मेमो Ex.PN है। मदन लाल मलिक पीडब्ल्यू -9 के

सामने किया गया अतिरिक्त न्यायिक कबूलनामा भरोसेमंद है, क्योंकि वह दोषी महसूस कर रहा था और अपीलकर्ता ने डॉ धर्मेंद्र शर्मा पीडब्ल्यू-2 के ससुर मदन लाल मलिक पीडब्ल्यू -9 के सामने अपना अपराध कबूल किया है। पुलिस ने 15 मार्च, 2004 से 26 मार्च, 2004 तक कार्रवाई नहीं की क्योंकि वह नहीं चाहती थी कि अपीलकर्ता द्वारा बच्चे को नुकसान पहुंचाया जाए। निरीक्षक राम दत्त पीडब्ल्यू-13 ने 26 मार्च, 2004 को मामले की जांच अपने हाथ में ली। अपीलकर्ता द्वारा दिए गए खुलासे के बयान पर, ओजू का मृत शरीर एक ईंट भट्टे के गैस आउटलेट से बरामद किया गया था। एफ.आई.आर दर्ज करने में देरी, यदि कोई है, उसको पर्याप्त रूप से समझाया गया है, क्योंकि मृतक के माता-पिता चुप रहे, ताकि बच्चे को कोई नुकसान न पहुंचे और बच्चे की रिहाई के लिए अपीलकर्ता के साथ सौदेबाजी भी की जाए।

10. विद्वान वकील ने आगे तर्क दिया है कि हत्या के संदर्भ को स्वीकार किया जाना चाहिए, क्योंकि साढ़े ३ वर्ष के छोटे बच्चे की हत्या समाज के खिलाफ अपराध है। छोटे बच्चे के सामने उसका सारा जीवन था, जिसे अपीलकर्ता ने पैसे की लालसा के लिए बुझा दिया था। बच्चे की मौत के बाद भी अपीलकर्ता ने फिरौती के पैसे माँगने बंद नहीं किए थे।

11. हमने दोनों पक्षों के वकीलों को सुना लिया है और उनकी सहायता से रिकॉर्ड का अवलोकन भी कर लिया है।

12. मुकेश प्रुथी पीडब्ल्यू-2 एक स्वतंत्र गवाह है। उन्होंने अदालत के समक्ष अपनी गवाही में कहा है कि वह दवाओं की आपूर्ति के लिए शर्मा अस्पताल आते थे, जिसका स्वामित्व डॉ धर्मेंद्र शर्मा पीडब्ल्यू -11 के पास था। 14 मार्च, 2004 को लगभग शाम 6.00 बजे, वह डॉ. धर्मेंद्र शर्मा पीडब्ल्यू-II से कुछ भुगतान लेने के लिए ग्राम, फरमाणा पहुंचे। उसी दिन शाम करीब 7.45 बजे अपना भुगतान लेने के बाद वह बस स्टैंड, फरमाना चला गया। वह रोहतक जाने के लिए जीप का इंतजार

कर रहा था और शराब के ठेके की रोशनी में उसने अपीलकर्ता को शर्मा अस्पताल की तरफ से एक बच्चे को लेकर भागते हुए देखा। उन्होंने अपीलकर्ता से पूछा कि वह कहां से आ रहा है। उसने बताया कि वह डॉ. धर्मेंद्र शर्मा के अस्पताल से बच्चे को दिखाकर आ रहा है, क्योंकि बच्चा ठीक महसूस नहीं कर रहा है। मुकेश प्रुथी पीडब्ल्यू -2 ने बच्चे का चेहरा नहीं देखा और यह माना कि अपीलकर्ता द्वारा ले जाया गया बच्चा उसका अपना था। उन्होंने आगे कहा है कि अपीलकर्ता डॉ. धर्मेंद्र शर्मा पीडब्ल्यू-11 को अच्छी तरह से जानता था और वह अक्सर उसे अस्पताल में बैठा हुआ पाता था। अगले दिन अर्थात 15 मार्च, 2004 को उन्हें इस घटना के बारे में पता चला कि डॉ धर्मेन्द्र शर्मा पीडब्ल्यू 11 के पुत्र ओजू का अपहरण कर लिया गया है। वह फरमाना आया और 15 मार्च, 2004 को पुलिस द्वारा दोपहर 12:30 बजे उसका बयान दर्ज किया गया। डॉ अंजू शर्मा पीडब्ल्यू-1 और डॉ धर्मेंद्र शर्मा पीडब्ल्यू-आईएल ने मुकेश प्रुथी पीडब्ल्यू 2 द्वारा बताए गए संस्करण की पुष्टि की है। डॉ. अंजू शर्मा पीडब्ल्यू-1 ने कहा है कि यह सही है कि पहली बार में, उनके पति (पीडब्ल्यू-11) ने नरेश और सुनील के बारे में शिकायत की क्योंकि ये दोनों व्यक्ति आपराधिक मानसिकता के थे, लेकिन बाद में उन्हें पता चला कि यह अपराध नरेश या सुनील ने नहीं किया था, बल्कि अपीलकर्ता सुरेंद्र @ मिठन ने किया था। इसी प्रकार, डा धर्मेन्द्र शर्मा पीडब्ल्यू 11 ने कहा है कि 26 मार्च, 2004 को दोपहर लगभग 2:15 बजे उन्हें मोबाइल नंबर 9812064388 से एक टेलीफोन कॉल आया, जो उनके मोबाइल नंबर 9812008042 पर प्राप्त हुआ। जिस व्यक्ति ने उन्हें फोन किया, उन्होंने कहा कि उनका बेटा उनके साथ है और अगर उन्हें 7 लाख रुपये की फिरौती दी जाती है तो वह उनके बेटे ओजू को वापस कर देंगे। चूंकि वह अपीलकर्ता को अच्छी तरह से जानता था, इसलिए उसने फोन करने वाले की आवाज को पहचान लिया था कि वह सुरेंद्र @ मिठन पुत्र ओम प्रकाश @ अजीत सिंह, गांव फरमाना का निवासी है। इसके बाद अपीलकर्ता ने उसे दोपहर 2.15 बजे से शाम 4.00 बजे तक, बीच-बीच में 8-10 बार फोन किया। अपीलकर्ता उसके अस्पताल में पिछले 4-5 सालों से आ रहा था। फरवरी, 2004 में,

उन्होंने उनकी मां का इलाज भी किया। वह 16 फरवरी, 2004 से 23 फरवरी, 2004 तक अस्पताल में भर्ती रहीं। अस्पताल रजिस्टर Ex PZ से पता चलता है कि फूलपति, पत्नी अजीत सिंह इस अवधि के दौरान अस्पताल में भर्ती रहे। मृतक ओजू अक्सर इस अवधि के दौरान अपीलकर्ता के साथ खेलता था, जब अपीलकर्ता की मां अस्पताल में भर्ती थी। रजिस्टर Ex PZ के पृष्ठ संख्या 88 और 96 के अनुसार अपीलकर्ता की मां 23 फरवरी, 2004 तक अस्पताल में भर्ती रही। डा धर्मेन्द्र शर्मा ने आगे कहा है कि उसी दिन अर्थात् 7 अप्रैल, 2004 को सायं 6:30 बजे पुलिस दल अपीलकर्ता के साथ आया था। अपीलकर्ता ने उस स्थान की पहचान की जहां मृतक ओजू को ले जाया गया था, जो एक ईंट भट्टे की चिमनी का गैस आउटलेट था। बच्चे के शव को बाहर निकाला गया। उसकी पहचान डॉ धर्मेंद्र शर्मा पीडब्ल्यू-11 ने की। मृतक ने वही कपड़े पहन रखे थे, जो उसने पहने हुए थे, जब उसका अपहरण किया गया था। उन्होंने आगे कहा है कि अपीलकर्ता पिछले 4-5 वर्षों से उनके परिवार के सभी सदस्यों को अच्छी तरह से जानता था। वह मदन लाल मलिक, पीडब्ल्यू-9 को भी जानता था। अपीलकर्ता को डॉ. धर्मेंद्र शर्मा पीडब्ल्यू-11 और उनके परिवार के सदस्यों के बारे में तब पता चला जब डॉ. धर्मेंद्र शर्मा पीडब्ल्यू-11 अपने अस्पताल का निर्माण कर रहे थे, क्योंकि अपीलकर्ता ने उस समय मिट्टी भरने का काम किया था। अस्पताल के निर्माण की निगरानी मदन लाल मलिक, पीडब्ल्यू 9, द्वारा की जा रही थी क्योंकि वह एक इंजीनियर थे। मुकेश प्रूथी पीडब्ल्यू-2, ने अपीलकर्ता द्वारा उसके साथ किए गए संदिग्ध व्यवहार के बारे में और उसके (पीडब्ल्यू-11) मोबाइल फोन पर प्राप्त टेलीफोन कॉल के बाद उसने तुरंत पुलिस को सूचित किया कि अपीलकर्ता वही है जिसने उसके बच्चे का अपहरण किया था।

13. जांच अधिकारी एस.आई, याद राम पीडब्ल्यू -12 ने कहा है कि अपीलकर्ता से पूछताछ के दौरान, उसने एक फ़र्द इंकसाफ़ दिया कि उसने ओजू के शव को एक ईंट भट्टे के गैस आउटलेट में छिपाया था। प्रकटीकरण बयान Ex पी.ए.डी पर गवाह द्वारा हस्ताक्षर किए गए थे।

मौके पर पहुंचने के बाद पुलिस ने ईंट भट्टे की चिमनी के गैस आउटलेट में घुसकर बच्चे का शव बरामद किया। शव की पहचान डॉ. धर्मेंद्र शर्मा पीडब्ल्यू-11 ने की। उसे वसूली ज्ञापन एक्स. PAA के माध्यम से कब्जे में ले लिया गया। इसी प्रकार, निरीक्षक राम दत्त पीडब्ल्यू 13 ने कहा है कि 26 मार्च, 2004 को उन्हें सी.आई.ए स्टाफ सोनीपत के निरीक्षक के रूप में तैनात किया गया था। धर्मेंद्र शर्मा ने उन्हें बताया कि अपीलकर्ता उनके बच्चे को वापस करने के लिए फिरौती के रूप में 7 लाख रुपये की मांग कर रहा था। 27 मार्च, 2004 को मोबाइल नंबर 9812064388, जिस से धर्मेंद्र शर्मा को कॉल की गई थी, का विवरण एस्कोटेल कंपनी से कब्जे में लिया गया था। विवरण की प्रति पूर्व एक्स. PD है, जिसे एक्स. PC द्वारा कब्जे में लिया गया था। एस्कोटेल सोनीपत के मुख्य प्रबंधक, अनिल श्रीवास्तव पीडब्ल्यू4 का बयान दर्ज किया गया, मोबाइल फोन नंबर Ex PF 9812008042 की कॉल का विवरण और मोबाइल नंबर Ex PF 9812064388 का स्वामित्व प्रमाण 30 मार्च, 2004 को Ex PF/2 द्वारा कब्जे में ले लिया गया था। यह वह मोबाइल था, जिसका मालिक अपीलकर्ता था। 9 अप्रैल, 2004 को अपीलकर्ता ने प्रकटीकरण वक्तव्य Ex PM दिया और उस प्रकटीकरण वक्तव्य के अनुसरण में, उसका मोबाइल फोन मोटोरोला उसके आवास से बरामद किया गया और वसूली ज्ञापन Ex.PN के तहत उसे हिरासत में ले लिया गया। इस मोबाइल फोन का आई.एम.ई.आई नंबर है -449269-18-1045147। यह IMEI, नंबर को मोबाइल नंबर 9812064388, जो एस्कोटेल से प्राप्त विवरणों से पाया गया, उससे तुलना की। मोबाइल फोन कॉल का विवरण अनुप्रयोगों के माध्यम से थाएस्कोटेल से लिया गया था, जो कि Ex. PAG, Ex. PAG__/I और Ex.PAG/2 है।

14. श्री अनिल श्रीवास्तव पीडब्ल्यू.4 ने कहा है कि 29 मार्च, 2004 को पुलिस ने मोबाइल नंबर 9812064388 से की गई कॉल के कम्प्यूटरीकृत विवरण और IMEI विवरण, स्वामित्व दस्तावेज Ex PD प्राप्त किए। ये कॉल 18 मार्च, 2004 से 29 मार्च, 2004 की अवधि के दौरान मोबाइल नंबर 9812064388 से किए गए थे जो Ex, PD/I से Ex.PD/3 है। मोबाइल फोन नंबर 9812064388 (अपीलकर्ता) की

संख्या यह 44926918104514 है और IMEI मोबाइल फोन नंबर 9812008042 (डॉ धर्मेंद्र शरमा पीडब्ल्यू 11) यह 44931787332583 है। उन्होंने आगे कहा है कि IMEI नंबर हैंड सेट का एक कोड नंबर है और यह नंबर मोबाइल हैंड सेट का एक विशेष नंबर है। जब किसी भी हैंड सेट में मोबाइल सिम कार्ड का इस्तेमाल किया जाता है और उस फोन से किसी दूसरे फोन पर कॉल किया जाता है तो कॉलिंग करने वाले मोबाइल हैंड सेट का आई.एम.ई.आई नंबर और साथ ही जिस हैंड सेट पर कॉल आई है, उसका आई.एम.ई.आई नंबर उनके एक्सचेंज में दर्ज हो जाता है। श्री अनिल श्रीवास्तव पीडब्ल्यू 4 के बयान से स्पष्ट है कि 18 मार्च, 2004 से 29 मार्च, 2004 की अवधि तक अपीलकर्ता डॉ. धर्मेंद्र शर्मा पीडब्ल्यू 11 को फोन कर रहा था और 7 लाख रुपये की फिरौती मांग रहा था।

15. अपीलकर्ता की निशानदेही पर शव की बरामदगी हुई है। अपीलकर्ता ने बच्चे को छिपाने के लिए, उसे गैस चैंबर या ईंट भट्टे की चिमनी में डाल दिया, और यह महसूस नहीं किया कि वो मर जाएगा। अपीलकर्ता और डॉ धर्मेंद्र शर्मा पीडब्ल्यू 11के मोबाइल फोन नंबर को जब IMEI के नंबर के साथ तुलना की जाये, तो यह पता चलता है कि अपीलकर्ता डॉ धर्मेंद्र शर्मा पीडब्ल्यू 11 को फोन कॉल कर रहा था। अपीलकर्ता ने सुधीर नाम के व्यक्ति के नाम पर गलत तरीके से सिम कार्ड नंबर लिया था।

16. शमन और गंभीर परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, हमारी सुविचारित राय है कि अपीलकर्ता का मामला दुर्लभतम मामलों की श्रेणी में नहीं आता है। यह सबूत में आया है कि अपीलकर्ता ने बच्चे को चिमनी के गैस आउटलेट में डाल दिया, और यह महसूस नहीं किया कि वह मर सकता है। अपीलकर्ता की मंशा फिरौती के पैसे निकालने की था न कि बच्चे को मारने की। अगर वह ओजू की हत्या करना चाहता था, तो वह उसी दिन ऐसा कर सकता था, जब रात में बच्चे का अपहरण किया गया था। डॉ. एस.के धतरवाल द्वारा चोट का कोई निशान नहीं पाया गया है। आपराधिक अपील में हमें आई.पी. सी

की धारा 302 के तहत अपीलकर्ता की दोषसिद्धि के मुकदमे के फैसले में कोई खामी नहीं मिली है। अपीलकर्ता की सजा कठोर पक्ष पर मानी जा रही है। मौत की सजा न देने के लिए अपीलकर्ता के पक्ष में जाने वाली परिस्थितियों को शमन करने वाली परिस्थितियां यह हैं कि सबसे पहले, यह परिस्थितिजन्य साक्ष्य का मामला है, हालांकि घटनाओं की श्रृंखला पूरी हो गई है। बच्चे को अपीलकर्ता ने मारना नहीं चाहा था, लेकिन बच्चे को छिपाने की उत्सुकता में, उसने उसे ईंट भट्टे के गैस आउटलेट में डाल दिया। उसे एहसास नहीं था कि बच्चा एक जगह पर जीवित रहने के लिए बहुत छोटा था, जो ठीक से हवादार भी नहीं था।

17. अपीलकर्ता की सजा को मौत की सजा से आजीवन कारावास में बदल दिया जाता है। अपीलकर्ता को 2,50,000 रुपये का जुर्माना देना होगा और डिफ़ॉल्ट होने पर दो साल की कठोर कारावास की सजा भुगतनी होगी। 2,50,000 रुपये की इस राशि में से 2,00,00 रुपये मृतक के पिता डॉ. धर्मेंद्र शर्मा पीडब्ल्यू 11 को मुआवजे के रूप में दिए जाएंगे।
18. सजा और जुर्माने के उपरोक्त संशोधन के साथ, अपीलकर्ता की अपील खारिज कर दी जाती है।

19. हत्या के संदर्भ को अस्वीकार कर दिया गया है।

अस्वीकरण : स्थानीय भाषा में अनुवादित निर्णय वादी के सीमित उपयोग के लिए है ताकि वह अपनी भाषा में इसे समझ सके और किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग नहीं किया जा सकता है । सभी व्यवहारिक और आधिकारिक उद्देश्यो के लिए निर्णय का अंग्रेजी संस्करण प्रमाणिक होगा और निष्पादन और कार्यान्वयन के उद्देश्य के लिए उपयुक्त रहेगा ।

अनमोल कक्कड़
प्रशिक्षु न्यायिक अधिकारी
(Trainee Judicial Officer) करनाल, हरियाणा